# Introduction to Sociology

**K.K. Chauhan**

(Assistant Professor)

Department of Education,

C.S.J.M. University, Kanpur

Email: aprof.kkc@gmail.com

# समाज का अर्थ एवं स्वरूप

## (MEANING AND NATURE OF SOCIETY)

- समाज शब्द संस्कृत के दो शब्दों सम् एवं अज से बना है।
  - ✓ सम् का अर्थ है इकट्ठा व एक साथ
  - ✓ अज का अर्थ है साथ रहना।
- इसका अभिप्राय है एक साथ रहने वाला समूह।
- साधारण अर्थ में 'समाज' शब्द का प्रयोग व्यक्तियों के समूह (संगठित या असंगठित) के लिए किया जाता है, जैसे:- आर्य समाज, ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, हिन्दू समाज, जैन समाज, विद्यार्थी समाज, महिला समाज आदि।

समाज एक उद्देश्यपूर्ण समूह होता है, जो किसी एक क्षेत्र में बनता है, उसके सदस्य एकत्व एवं अपनत्व में बंधे होते हैं।

- समाजशास्त्री समाज को एक अचित्रित या अमूर्त सम्प्रत्यय कहते हैं तथा वे समाज को सामाजिक सम्बन्धों का जाल मानते हैं।
- सामाजिक सम्बन्धों से बने सामाजिक समूह को समाज कहते हैं।
- वर्तमान में मानव का समाज के साथ वही घनिष्ठ सम्बंध हो गया है और शरीर में शरीर के किसी अवयव का होता है।

'समाज' शब्द का अर्थ:

- ✓ किसी ने व्यक्तियों के समूह के रूप में,
- ✓ किसी ने समिति के रूप में,
- ✓ तो किसी ने संस्था के रूप में किया है।

इसी वजह से समाज के अर्थ में निश्चितता का अभाव पाया जाता है।

**समूह Group:-** जब दो या दो से अधिक व्यक्ति सामान्य उद्देश्य के लिए एक-दूसरे से संबंध स्थापित करते है और प्रभावित होते है तो व्यक्तियों के ऐसे संग्रह को समूह कहा जाता हैं। जैसे- आपका परिवार, कक्षा तथा क्रीड़ा-समूह

**समिति Association:-** व्यक्तियों के द्वारा अपने समान उद्देश्य की पूर्ति करने के लिए विचारपूर्वक निर्मित एक ऐसा संगठन जिसकी सदस्यता ऐच्छिक होती हैं। यह सामान्य हितों को ध्यान मे रखकर विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति लिए गठित होती हैं। उद्देश्यों की पूर्ति के पश्चात समिति भंग भी हो सकती हैं। उदाहरण; छात्र समिति, व्यापारिक समिति, श्रम संघ, दुर्गोत्सव समिति आदि।

**संस्था Institutions:-** किसी विशिष्ट उद्देश्य की प्राप्ति के लिये स्वतः विकसित कार्य-प्रणालियों, विचारों, सिद्धांतों तथा नियमों आदि की अमूर्त परन्तु स्थायी व्यवस्था को सामाजिक संस्था कहा जाता हैं। जैसे-- परिवार, जेल, राज्य आदि।

मैकाइवर ने 'महाविद्यालय' का उदाहरण दिया हैं।

I. जब हम विद्यलय के छात्रों और अध्यापकों का एक समूह मात्र बनाते हैं, तो यह समिति है।

II. जब हम महाविद्यालय की शिक्षा-प्रणाली और कार्यप्रणाली की बात करते है तो इसका अर्थ संस्था से होता हैं।

**मकीवर एवं पेज-** यह सामाजिक सम्बन्धों का जाल है और यह निरन्तर परिवर्तनशील है। तात्पर्य यह है कि समाज व्यक्तियों का समूह नहीं बल्कि व्यक्तियों के बीच पाया जाने वाला पारस्परिक सम्बन्ध होता है। समाज कोई मूर्त संगठन नहीं है। यह केवल 'सामाजिक सम्बन्धों का एक जाल है (Society is the Network of social relationships.) ।

सामाजिक सम्बन्धों का निर्माण सामाजिक अन्तःक्रिया (Social Interaction) से होता है।

सामाजिक अन्तःक्रिया तीन स्तरों पर संभव है:

(क) व्यक्ति-व्यक्ति के बीच अन्तःक्रिया (Between individuals),

(ख) व्यक्ति समूह के बीच अन्तःक्रिया (Between individual and groups )

(ग) समूह समूह के बीच अन्तःक्रिया (Between groups)।

इन तीनों स्तरों पर जिन क्रियाओं का आदान-प्रदान होता है उनके फलस्वरूप विभिन्न प्रकार के सम्बन्धों का निर्माण होता है, वही समाज कहलाता है।

जॉनसन ने समाज को मूर्त रूप में परिभाषित किया है। उन्होंने बताया है कि समाज एक ऐसा समूह है जिसमें चार तत्त्व पाये जाते हैं-

(1) निश्चित क्षेत्र (Definite Territory),

(2) प्रजनन (Reproduction),

(3) विस्तृत संस्कृति (Comprehensive Culture)

(4) स्वतंत्रता (Independence)

## समाज की विशेषताएँ (Characteristics of Society)

1. पारस्परिक जागरूकता (Mutual Awareness)
2. समानता (Likeness)
3. भिन्नताएँ (Differences)
4. सहयोग एवं संघर्ष (Co-operation and Conflict)
5. समाज अमूर्त (Abstract)
6. पारस्परिक निर्भरता (Inter-dependence )
7. निरन्तर परिवर्तनशीलता

## व्यक्ति एवं समाज का सम्बन्ध (Relationship Between Individual and Society)

व्यक्ति और समाज के बीच सम्बन्धों को मुख्य रूप से दो भागों विभक्त किया जा सकता है

I. सामाजिक समझौता का सिद्धान्त (Social Contract Theory) एवं

II. समाज का अवयवी सिद्धान्त (Organismic Theory)।

वर्तमान में इन दोनों सिद्धान्तों को अपर्याप्त भ्रामक एवं काल्पनिक माना जाता है। इन सिद्धान्तों में दार्शनिक विचार ज्यादा तथा समाजशास्त्रीय विचार कम दिखाई पड़ते हैं।

## (A) सामाजिक समझौता या संविदा का सिद्धान्त (Social Contract Theory)

- ✓ व्यक्तियों के द्वारा समाज जैसे संगठन का निर्माण जानबूझकर किया गया है।
- ✓ इसका निर्माता स्वयं मनुष्य है।
- ✓ समाज की तुलना में व्यक्ति को अधिक महत्त्व देते हैं।

अतः सामाजिक निर्णय एवं व्यक्तिगत निर्णय के बीच भेद हो सकता है एवं सामाजिक निर्णय के विरुद्ध व्यक्ति को निर्णय लेने का अधिकार प्राप्त है।

प्रमुख विचारक हाब्स, लॉक तथा रूसो आदि इस दृष्टिकोण के समर्थक थे।

## (B) समाज का अवयवी सिद्धान्त (Organismic Theory)

- अवयवी सिद्धान्त, सामाजिक समझौते के सिद्धान्त के ठीक विपरीत है।
- अवयवी सिद्धान्त के अनुसार समाज प्रधान है, व्यक्ति उस पर निर्भर करता है, अतः समाज को व्यक्ति पर हावी रहना है।
- समाजशास्त्र के कुछ प्रारम्भिक विद्वानों ने इसे स्पष्ट करने के लिए समाज की तुलना शारीरिक अवयव से की।
- जिस प्रकार शरीर और उसके विभिन्न अंग मिलकर काम करते हैं, उसी प्रकार समाज की संरचना भी अवयवी है।
- समाज में उसी तरह की व्यवस्था है जिस तरह शरीर में अलग-अलग अंग है। यह पूरा शरीर अवयवों की एक समन्वित इकाई है। समाज की व्यवस्था भी इसी ढंग की है, व्यक्ति उसके , अंग मात्र हैं जो मिलकर समाज का निर्माण करते हैं।

- अवयवी सिद्धान्त ब्रिटिश समाजशास्त्री हर्बर्ट स्पेन्सर ने दी।
- उन्होंने कहा कि जिस प्रकार शरीर के अंग अलग-अलग कार्य करते हैं, उसी तरह समाज के अंग भी अलग-अलग कार्य करते हैं। अर्थात् विभिन्न व्यक्ति अलग-अलग ढंग से कार्य करते हैं।
- इस प्रकार संक्षेप में अवयवी सिद्धान्त का कहना है कि

  (1) व्यक्ति समाज का एक अंग मात्र है,

  (2) समाज के बाहर व्यक्ति का कोई अस्तित्व नहीं है

  (3) उसे समाज के नियमों, मूल्यों एवं आदर्शों के अनुकूल ही चलना है। समाज सर्वोपरि है

# समाजशास्त्र का अर्थ एवं पारिभाषा

## (Meaning and Definition of Sociology)

- ✓ हिंदी का समाजशास्त्र शब्द अंग्रेजी के "सोशियोलॉजी" शब्द का रूपांतरण है.
- ✓ अंग्रेजी का सोशियोलॉजी शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है।
  - I. पहला शब्द 'सोसियस' (Socius) लैटिन भाषा
  - II. दूसरा शब्द 'लोगस' (Logus) ग्रीक भाषा से
- ✓ सोशियो का अर्थ है समाज से संबंधित और लोजी का अर्थ है ज्ञान अथवा विज्ञान.
- ✓ इस प्रकार सोशलॉजी का शाब्दिक अर्थ है समाज से संबंधित विज्ञान, जो समाज के विषय में अध्ययन करता है.
- ✓ समाज का अर्थ यहाँ मानव समाज से है. इस प्रकार समाजशास्त्र केवल मानव समाज का अध्ययन करता है.

समाज क्या है?

समाज का निर्माण कैसे होता है?

समाज में व्यक्ति किस प्रकार अंत:क्रिया करता है?

- समाजशास्त्र का अतीत तो लम्बा है लेकिन इतिहास बहुत ही संक्षिप्त है।
- फ्रांस (French) के महान दार्शनिक आगस्त काम्टे (Auguste Comte) एक व्यवस्थित विज्ञान के रूप में एक नवीन समाज विज्ञान की कल्पना 1838 में की। उसको सामाजिक भौतिकी (Social Physics) का नाम दिया।
- जिसे बदलकर 1938 में उन्होंने उसका नाम समाजशास्त्र (sociology) रखा।
- काम्टे को समाजशास्त्र का जन्मदाता माना जाता है।

- काम्टे के बाद जॉन स्टुअर्ट मिल (John Stuart Mill) और हरबर्ट स्पेन्सर (Herbert spencer) ने समाजशास्त्र को एक व्यवस्थित स्वरूप प्रदान कर एक पूर्ण शास्त्र की संज्ञा प्रदान की।
- काम्टे के उपरान्त 1976 में 'समाजशास्त्र के सिद्धान्त' (Principal of Sociology) के नाम से हर्बर्ट स्पेन्सर की एक पुस्तक प्रकाशित हुई। इस पुस्तक से समाजशास्त्र विषय को पर्याप्त मान्यता प्राप्त हुई।

- उन्होंने इस विषय की कल्पना फ्रांस की औद्योगिक क्रांति (Industrial Revolution) से उत्पन्न सामाजिक समस्याओं के अध्ययन करने के लिए की थी।
- धीरे-धीरे यह विषय जर्मनी, इंग्लैंड और यूरोप के अन्य देशों में फैलता गया और आज यह सारी दुनिया में एक लोकप्रिय विषय के रूप में स्थापित हो गया है।
- समाजशास्त्र के प्रारंभिक लेखकों में कौत के अलावा स्पेन्सर (Herbert Spencer), एमिल डर्कहाइम (Emile Durkheim) तथा मैक्स वेबर (Max Weber) का नाम विशेष रूप से लिया जाता है।

## समाजशास्त्र की पारिभाषा

## (Definition of Sociology)

**अगस्त काम्टे (Auguste Comte)** के अनुसार, "समाजशास्त्र सामाजिक व्यवस्था तथा सामाजिक प्रगति का विज्ञान है." (Sociology is the science of social order and social progress.)

**मोरिस गिन्सबर्ग (Morris Ginsberg)** के अनुसार, "समाजशास्त्र मनुष्यों की अंतः क्रिया और अंत: संबंधों, उनकी दशाओं और परिणामों का अध्ययन है." (In the broadest sense, sociology is the study of human interactions and interrelations, their condition and consequences.)

**मेकाइवर और पेजे ((R. M. MacIver and Charles H. Page, 1985)** के अनुसार, "समाजशास्त्र सामाजिक संबंधों का व्यवस्थित अध्ययन है. सामाजिक संबंधों के जाल को हम समाज कहते हैं। **(Sociology is "about" social relationships, the networkof human relationship we call society.)**

**गिलिन और गिलिन (Gillin and Gillin)** के अनुसार—"व्यापक अर्थों में समाजशास्त्र वह विज्ञान है जो मानव समूह के संयोग से उत्पन्न होने वाली अन्तःक्रियाओं का अध्ययन करता है। "Sociology in its broadest sense may be said to be study of interactions arising from the association of living beings."

**Lester F. Ward)** न कहा कि "समाजशास्त्र समाज का या सामाजिक घटनाओं (या तथ्यों) का विज्ञान है।" (Sociology is the science of society or of phenomena.)

**सोरोकिन (Sorokin)** के अनुसार, "समाजशास्त्र सामाजिक-सांस्कृतिक घटनाओं के सामान्य स्वरूपों, प्रारूपों और अनेक प्रकार के अंतर संबंधों का सामान्य विज्ञान है."

**क्यूबर (Cuber)** के अनुसार, "समाजशास्त्र को मानव संबंधों के वैज्ञानिक ज्ञान की शाखा कहा जा सकता है."

**Major contributions was to help define and establish the field of sociology as an academic discipline.**

**Emile Durkheim**

समाजशास्त्र के स्वरूप के सम्बन्ध में विभिन्न मतों, परिभाषाओं एवं विचारों को अलेक्स इंकल्स (Alex Inkeles) ने तीन भागों में बाँटा है-

**1. समाजशास्त्र समाज के अध्ययन के रूप में**

**(Sociology as the study of society)**

समाजशास्त्र पूरे समाज का उसकी समग्रता (Totality) में अध्ययन करता है। इस विचार को मानने वालों ने समाजशास्त्र को समाज की आन्तरिक समस्याओं, समाज किन-किन तत्त्वों के मिलने से बना है, उन तत्त्वों के मिलने से समाज किस प्रकार कार्य करता है इत्यादि विषयों का अध्ययन माना है।

काँत, स्पेन्सर, मैक्स वेबर आदि समाजशास्त्री इस वर्ग के अंतर्गत आते हैं।

## 2. समाजशास्त्र संस्थाओं के अध्ययन के रूप में

(Sociology as the study of institutions)

कुछ समाजशास्त्री मानते हैं कि समाजशास्त्र समाज में पायी जाने वाली विभिन्न संस्थाओं, जैसे- परिवार, जाति, धर्म, नातेदारी प्रथा, राजनीतिक दल एवं शैक्षणिक और सांस्कृतिक संस्थाओं का अध्ययन करता है।

इस विचार को मानने वालों की संख्या बहुत अधिक नहीं है। कुछ प्रमुख समाजशास्त्रियों में डर्कहाइम का नाम सबसे ऊपर है।

डर्कहाइम ने कहा था कि "समाजशास्त्र संस्थाओं का विज्ञान है।" **(Sociology is the science of institutions.)**

**3. समाजशास्त्र सामाजिक सम्बन्धों के अध्ययन के रूप में** (Sociology as the study of social relationships) –

इस विचारधारा को मानने वालों में मकीवर एवं पेज का कहना है कि समाज सामाजिक सम्बन्धों का एक जाल है और समाजशास्त्र उन्हीं अमूर्त सामाजिक सम्बन्धों का एक अध्ययन है।

लोगों के मिलने से एक खास किस्म के सम्बन्धों का निर्माण होता है और समाजशास्त्र उन्हीं सम्बन्धों का एक वैज्ञानिक अध्ययन है।

## समाजशास्त्र का विषयक्षेत्र एवं विषय-सामग्री (Scope and Subject-Matter of Sociology)

- (1) समाज अथवा सामाजिक सम्बन्धों का वैज्ञानिक अध्ययन
- (2) आधारभूत सामाजिक समूहों (परिवार, जाति, प्रजाति एवं धार्मिक, आर्थिक, राजनैतिक, शैक्षिक, मनोरंजनात्मक और कल्याणकारी संस्थाओं) का अध्ययन।
- (3) सामाजिक अन्तक्रियाओं (प्रेम-द्वेष सहयोग-संघर्ष) का अध्ययना
- (4) सामाजिक नियन्त्रण के कारक तत्त्वों (संस्कृति, धर्म, परम्परा, रीति रिवाज, लोकरीति, नैतिकता, विश्वास, मूल्य, विधि एवं सत्ता आदि) का अध्ययन ।
- (5) सामाजिक परिवर्तन के कारक तत्त्वों (प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक) का अध्ययन ।

## समाजशास्त्र का महत्व, उपयोगिता

## Relevance of Sociology

- समाज के सम्बन्ध में वैज्ञानिक ज्ञान
- सामाजिक समस्याओं को हल करने में सहायक
- धार्मिक एकता प्राप्त करने में सहायक
- नवीन सामाजिक परिस्थितियों से अनुकूलन करने में सहायक
- सामाजिक जीवन की सामान्य समस्याओं का ज्ञान
- पारिवारिक जीवन और समाजशास्त्र
- अन्तर्राष्ट्रीय जीवन और समाजशास्त्र
- समाजशास्त्र का व्यावसायिक महत्व

## शिक्षा का समाज पर प्रभाव (Impact of Education on Society)

- सामाजिक विरासत का संरक्षण
- सामाजिक भावना को जाग्रत करना
- समाज का राजनैतिक विकास
- समाज का आर्थिक विकास
- सामाजिक नियन्त्रण्
- सामाजिक परिवर्तनों को बढ़ावा
- सामाजिक सुधार
- बालक का सामाजीकरण

## समाज का शिक्षा पर प्रभाव (Impact of Society on Education)

- शिक्षा के स्वरूप का निर्धारण
- शिक्षा के उददेश्य का निर्धारण
- शिक्षा की पाठयचर्या का निर्धारण
- शिक्षण विधियों का निर्धारण
- विद्यालय के स्वरूप का निर्धारण
- प्रबन्धन के तरीकों का निर्धारण

# References


- Aggarwal, J. C. (2014). Philosophical and Sociological Perspectives on Education. Delhi: Shipra publication.
- Arulsamy, S. (2011). Philosophical and Sociological Perspectives on Education. Hyderabad: Neelkamal Publication Pvt. Ltd.
- Dewey, J. (1956). The school and Society. Chicago: University of Chicago Press.
- Dewey, J. (1963). Democracy and education. New York: Macmillan.
- Freire, P (1970). Cultural action for freedom. Penguin education Special, Ringwood, Victoria, Australia
- Ballantine, J. H., & Hammack, F. M. (2009). *The sociology of education: A systematic analysis* (6th ed.). Upper Saddle River, NJ: Prentice Hall.
- Freire, Paulo (1993). Pedagogy of the oppressed (revised ed.). London, UK: Penguin books.
- Ghosh, S.C. (2007) History of education in India , Rawat publications .
- Govt. of India (2009) The right of Children to free and compulsory education act 2009
- Nambisan, G.B.(2009) Exclusion and discrimination in school experiences of Dalit children , Indian institute of Dalit Studies and UNICEF.
- Pathak A. (2013) social implication of schooling; knowledge, Pedagogy and consciousness. Aakar books

- ✓ • अग्रवाल एस० के०, शिक्षा के दार्शनिक एवम समाजशात्रीय आधार आगरा भार्गव बुक हाउस ।
- ✓ • पाण्डेय, रामशकल शिक्षा की दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि: आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर ।
- ✓ • पाल, एस० के० गुप्त, लक्ष्मी नारायण, मदन मोहन, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, इलाहाबाद, कैलाश प्रकाशन
- ✓ • माथुर, एस० एस० शिक्षा के दार्शनिक तथा सामाजिक आधार, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर ।
- ✓ • लाल, रमन बिहारी: शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ
- ✓ • सक्सेना एन० आर० एस० शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार आगरा भार्गव बुकहाउस ।

Thank you…